



### SHRI RADHESHYAM BARLE

Shri Radheshyam Barle is a Panthi Folk Dance artist of Chhattisgarh. Panthi Folk Dance is one of the world's fastest Dance form. He is widely recognized across the country for his Panthi Dance through which he spreads the messages of Guru Ghasidas Baba ji and his life philosophy to the masses.

2. Born on 10<sup>th</sup> October, 1966, Shri Barle completed his MBBS (Biochemic) in 1994 and Diploma in Lok Sangeet from Indira Kala Sangeet Vishwavidyalay Kheragadh in 2004. He learnt Panthi dance from his father Late Shri Samaroo Ram Barle and later from Late Shri Devdas Banjare. He gave his first performance at the age of 11 at Gram Bodal, Rajoli.

3. Shri Barle founded Panthi Dance academy in 2006. The academy has about 2172 panthi dance groups and 65000 dancers. From past many years, he has organized many folk dance training camps for those art forms which are going to extinct like khanjeri, chikara, khade saajh, bans geet, Nacha, gammat, satnam bhajan, danda nritya, etc.

4. Shri Barle has performed in almost every State of India and in many festivals like Bhoram Dev, Sirpur Mahotsav, Bhojpur Utsav, Vidhisha Mahotsav, Shihansth Mela Ujjain, Khajuraho Mahotsav, Kharvel Mahotsav, etc. He has also performed for various causes that are supported by Government like Swach Bharat Abhiyan, Pulse Polio, Anti Malaria Campaign, Breast Feeding, Anti-Terrorism, Cancer, Aids, Save Girl Child, Educate Girl Child, etc. He organized "Panthi Mahakumbh" in 2008 and Tribble Karma Festival in 2016 in which, 14000 Panthi artists and 16000 Karma artists participated.

5. Shri Barle has received various awards and honours including first Devdas Banjare State Award in 2008 by the Government of Chhattisgarh for his continuous Kala Yatra; Guru Ghasidas Samaj Dalit Chetna State Adornment in 2012 from the then Hon'ble President of India, Shri Pranab Mukherjee; Dr. Bhawar Singh Porte Aadivaasi Seva Award in 2016 from former Home Minister, Shri Rajnath Singh. He is the only Folk Dance artist of Chhattisgarh who has received three Rajya Alankaran from the State Government.



## श्री राधेश्याम बारले

श्री राधेश्याम बारले छत्तीसगढ़ के पंथी लोक नृत्य कलाकार हैं। पंथी लोक नृत्य दुनिया की सबसे तेज नृत्य शैली में से एक है। उन्हें पूरे देश में पंथी नृत्य के लिए जाना जाता है और वह इसके जरिए जन-जन तक गुरु घासीदास बाबा जी की शिक्षा और उनके जीवन दर्शन का प्रचार-प्रसार करते हैं।

2. 10 अक्टूबर, 1966 को जन्मे श्री बारले ने 1994 में एमबीबीएस (बायोकेमिक) और 2004 में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खेरागढ़ से लोक संगीत में डिप्लोमा पूरा किया। उन्होंने अपने पिता स्वर्गीय श्री समरु राम बारले से और बाद में स्वर्गीय श्री देवदास बंजारे से पंथी नृत्य सीखा। उन्होंने अपना पहला नृत्य प्रदर्शन 11 वर्ष की उम्र में ग्राम बोदल, राजौली में किया था।

3. श्री बारले ने 2006 में पंथी नृत्य अकादमी की स्थापना की थी। अकादमी में करीब 2172 पंथी नृत्य मंडलियां और 65000 नर्तक हैं। उन्होंने पिछले कई वर्षों से खंजेरी, चिकारा, खाडे साझ, बांस गीत, नाचा, गम्मत, सतनाम भजन, डंडा नृत्य आदि जैसी विलुप्त होती जा रही अनेक नृत्य शैलियों में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए लोक नृत्य शिविरों का आयोजन किया है।

4. श्री बारले ने भारत के लगभग हर राज्य में तथा भोरम देव उत्सव, सिरपुर महोत्सव, भोजपुर उत्सव, विदिशा महोत्सव, सिंहस्थ मेला उज्जैन, खजुराहो महोत्सव, खारवेल महोत्सव आदि में भी नृत्य प्रदर्शन किया है। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान, पल्स पोलियो, मलेरिया रोधी अभियान, स्तनपान, आतंक रोधी, कैंसर, एड्स, बालिका बचाओ, बालिका शिक्षा आदि जैसे सरकार द्वारा समर्थित विभिन्न अभियानों के लिए भी प्रदर्शन किया है। उन्होंने 2008 में "पंथी महाकुंभ" और 2016 में जनजातीय कर्मा महोत्सव का आयोजन किया, जिसमें 14000 पंथी कलाकारों और 16000 कर्मा कलाकारों ने भाग लिया था।

5. श्री बारले को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें 2008 में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा उनकी निरंतर कला यात्रा के लिए, प्रथम देवदास बंजारे राज्य पुरस्कार; 2012 में तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति भारत सरकार, श्री प्रणब मुखर्जी से गुरु घासीदास समाज दलित चेतना राज्य अंलंकरण; पूर्व गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह से 2016 में डॉ. भवर सिंह पोर्ते आदिवासी सेवा पुरस्कार शामिल हैं। वह छत्तीसगढ़ के एकमात्र लोक नृत्य कलाकार हैं, जिन्हें राज्य सरकार से तीन राज्य अलंकरण प्राप्त हुए हैं।